डेयरी व्यवसाय को बनाया आजीविका का साधन

पशुपालक का नाम	:	श्री बच्चू सिंह
पिता का नाम	:	श्री बल्लूराम
उम्र	:	66 वर्ष
पता	:	हेलक, कुम्हेर (भरतपुर)
शिक्षा	:	8वीं पास
मोबाईल नं.	:	8947855152

कुम्हेर तहसील में ग्राम हेलक के रहने वाले बच्चू सिंह पुत्र बल्लूराम किसान है जिन्होंने कम जमीन होने के बावजूद पशुपालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। बच्चू सिंह शुरू से ही खेती तथा पशुपालन पर ही आश्रित थे, लेकिन पिछले 3–4 वर्षो में पशुपालन पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया तथा सार्थक तरीके से अपनाया। पहले इनके घर में केवल आवश्कता के अनुसार ही पशुपालन था परन्तु समय के साथ–साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। बच्चू सिंह के पास 20 बीघा जमीन है परन्तु उनका कहना है कि जितनी बचत उन्हें पशुपालन से हो रही है, उतनी कृषि से नहीं है। वर्तमान में बच्चू सिंह के पास 12 भैंसें तथा 3 गायें हैं। जिनसे प्रतिदिन 120 लीटर दूध का उत्पादन कर रहा है। इस दूध को वे प्रतिदिन 6000 रूपये में बेचकर लगभग 3000 रूपये की बचत प्रतिदिन कर रहे हैं। बच्चू सिंह बताते है कि वे कृषि से भी लगभग 1.50 लाख–2 लाख रूपये प्रतिवर्ष प्राप्त करते हैं। बच्चू सिंह उन्नत तकनीकों को अपना रहे है। वे समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर, भरतपुर, कुम्हेर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते हैं। बच्चू सिंह बताते है कि उन्हें प्रशिक्षण से काफी फायदा हुआ है। बच्चू सिंह अपना सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर को देते हैं।

बकरी पालन शुरू कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने अमर सिंह

पशुपालक का नाम	:	श्री अमर सिंह
पिता का नाम	:	श्री वृन्दावनसिंह
उम्र	:	60 वर्ष
पता	:	नगला समन, कुम्हेर (भरतपुर)
शिक्षा	:	11वीं पास
मोबाईल नं.	:	9982566104

भरतपुर जिले के कुम्हेर तहसील के अमर सिंह प्रगितिशील पशुपालक एवं किसान हैं। अमर सिंह समन्वित कृषि पशुपालन अपनाकर अच्छा लाभ ले रहे हैं और आर्थिक उन्नति का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। अमर सिंह पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर, भरतपुर से शुरू से ही जुड़े हुए है और समय–समय पर संस्थागत प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इनके पास 3.5 एकड़ जमीन है। अमर सिंह के पास वर्तमान में बारबरी नस्ल की 60 मादा बकरियां, 42 नर बकरे एवं 17 नवजात बच्चे हैं। इस वर्ष 70 बकरों का विक्रय कर 8.5 लाख आय अर्जित की है। इसके अलावा ये आंवले की प्रसंस्करण इकाई में मुरब्बा, केन्डी बनाते हैं। आंवला के 100 पौधे और 30–32 बैर के पौधे लगाए हैं। बिजली की बचत के लिए सौर ऊर्जा इकाई स्थापित की है। इस प्रकार अमर सिंह समन्वित कृषि पशुपालन से प्रतिवर्ष अच्छी आय प्राप्त कर लेते हैं। 60 वर्षीय अमर सिंह ने बकरी पालन की मदद से आर्थिक आत्मनिर्भरता की एक मिसाल कायम की है।

भेड़ पालन कर बेरोजगारी के अभिशाप से निजात पाई

पशुपालक का नाम	:	श्री रंगल खान
पिता का नाम	:	श्री कदरू खान
उम्र	:	55 वर्ष
पता	:	खोरी, डीग (भरतपुर)
शिक्षा	:	5वीं पास
मोबाईल नं.	:	8094619576

पशुपालन हमारे लिए जीविकोपार्जन का एक भरोसेमंद और लाभ का व्यवसाय हो सकता है। थोड़ी सी समझदारी और मेहनत से युवा लोगों द्वारा बेकारी, बेरोजगारी जैसे अभिशाप से निजात पाई जा सकती है। राजस्थान में वर्षा आधारित कृषि की अनिश्चितता के बीच पशुपालन एक ठोस विकल्प रहा है तथा भेड़पालन ग्रामीण क्षेत्र में एक प्रमुख व्यवसाय रहा है। रंगल खान ने भेड़ पालन को अपनाकर आर्थिक उन्नति का उदाहरण प्रस्तुत किया है जो भरतपुर जिले के डीग तहसील के गांव खोरी के निवासी है। इनके पास पैतृक 3 बीघा जमीन थी किन्तु आय पर्याप्त नहीं होने के कारण भेड़ पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाया और पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर, भरतपुर, से समय–समय पर वैज्ञानिक विधियों से भेड़ पालन, आवास एवं आहार प्रबंधन, टीकाकरण आदि का प्रशिक्षण प्राप्त कर अच्छा भेड़ पालन कर रहे हैं। रंगल खान के पास 70 मादा भेड़ एवं 2 नर भेड़ हैं। जिससे प्रतिवर्ष 90–100 मेमने विक्रय करते है। एक मेमने के विक्रय से लगभग 4000/– रूपये प्राप्त करते हैं। इसके अलावा ऊन विक्रय से भी आय अर्जित करते हैं। रंगल खान कृषि से भी 50000/– रूपये प्रति वर्ष प्राप्त करते हैं। इस प्रकार रंगल खान लगभग 4 लाख से 4.5 लाख रूपये प्रतिवर्ष आमदनी प्राप्त कर लेते हैं। 55 वर्षीय रंगल खान ने भेड़ पालन की मदद से अशिक्षा व गरीबी को पीछे छोड़ते हुए आर्थिक आत्मनिर्भरता की एक मिसाल कायम की है।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

उन्नत तकनीकों का डेयरी व्यवसाय में किया सफल प्रयोग

पशुपालक का नाम	:	श्री छोटेलाल
पिता का नाम	:	श्री बृजसिंह
उम्र	:	48 वर्ष
पता	:	बरौली धाऊ, कांमा (भरतपुर)
शिक्षा	:	10वीं पास
मोबाईल नं.	:	9694967916

कांमा (भरतपुर) के छोटेलाल (भूतपूर्व सैनिक) कृषि व पशुपालन का तालमेल उनके जीवन निर्वाह और आय का एक प्रमुख साधन रहा है। छोटेलाल सेवानिवृत होने के बाद से खेती तथा पशुपालन पर ही आश्रित थे, लेकिन पिछले 3–4 वर्षो में पशुपालन पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया तथा पशुपालन द्वारा आजीविका कमाने का निर्णय लिया जो बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। छोटेलाल के पास 12 बीघा जमीन है परन्तु उनका कहना है कि जितनी बचत उन्हें डेयरी व्यवसाय से हो रही है, उतनी कृषि से नहीं है। वर्तमान में छोटेलाल के पास 10 भैंसें, 3 गाय, 2 बछड़ी तथा 8 पाड़ी–पाड़े हैं जिनसे प्रतिदिन 80 लीटर दूध का उत्पादन कर रहे हैं। इस दूध को वे प्रतिदिन 2400 रूपये में बेचकर लगभग 1500 रूपये की बचत प्रतिदिन कर रहे हैं। छोटेलाल बताते है कि वे कृषि से भी लगभग 2 लाख रूपये प्रतिवर्ष प्राप्त करते हैं। छोटेलाल समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते हैं तथा व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु संपर्क में रहते हैं। छोटेलाल बीकानेर एवं जयपुर में विश्वविद्यालय के अन्य प्रशिक्षणों में जा चुके हैं। इन प्रशिक्षणों से प्राप्त जानकारी एवं उन्नत तकनीकों का डेयरी व्यवसाय में उपयोग किया। प्रशिक्षण से काफी फायदा हुआ है। छोटेलाल बताते हैं कि उन्हें प्रशिक्षण से पशुपालन के क्षेत्र में नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी अन्य पशुपालकों को भी देते है। 48 वर्षीय छोटेलाल अपने डेयरी व्यवसाय में सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर को देते हैं।

बाजार की जरूरत को देखते हुए डेयरी व्यवसाय शुरू किया

पशुपालक का नाम	:	श्री गोविन्द सिंह
पिता का नाम	:	श्री मदन सिंह
उम्र	:	65 वर्ष
पता	:	नगला मैंथला, कुम्हेर (भरतपुर)
शिक्षा	:	12वीं
मोबाईल नं.	:	9785037917

कुम्हेर तहसील में गांव नगला मैंथना के निवासी गोविन्द सिंह पुत्र मदन सिंह का कहना है कि कृषि व पशुपालन का तालमेल उनके जीवन निर्वाह और आय का एक प्रमुख साधन रहा है। गोविन्द सिंह ने पिछले 8 वर्षो से पशुपालन पर अपना ध्यान केंद्रित किया तथा सार्थक तरीके से अपनाया। इन्होंने पशुपालन द्वारा आजीविका कमाने का निर्णय लिया, वह उनके लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। पहले इनके घर में केवल आवश्यकता के अनुसार ही पशुपालन होता था परन्तु समय के साथ–साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। वर्तमान में गोविन्द सिंह के पास 10 भैंसें हैं जिनसे प्रतिदिन 100–125 लीटर दूध का उत्पादन कर रहे हैं। इस दूध को वे प्रतिदिन 5000 रूपये में बेचकर लगभग 2500 रूपये की बचत प्रतिदिन कर रहे हैं। गोविन्द सिंह बताते है कि वे कृषि से भी लगभग 2–3 लाख रूपये प्रतिवर्ष प्राप्त करते हैं। गोविन्द सिंह समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते हैं तथा व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु संपर्क में रहते हैं। प्रशिक्षण से काफी फायदा हुआ है। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित पशु आहार आदि की जानकारी प्राप्त की। गोविन्द सिंह बताते है कि उन्हें प्रशिक्षण से पशुपालन के क्षेत्र में नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी अन्य पशुपालकों को भी देते हैं। 65 वर्षीय गोविन्द सिंह अपने डेयरी व्यवसाय में सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर को देते हैं।